शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

अंक : 55

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

माह : अक्टूबर वर्ष : 2025

मिशन शिक्षण संवाद

अंक : 55

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

प्रधान सम्पादक

विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

अवनीन्द्र कुमार जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

आनंद मिश्रा, ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह-सम्पादक

सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

विकास शर्मा, आनंद मिश्रा

विशेष सहयोगी

विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद,

साकेत बिहारी शुक्ल

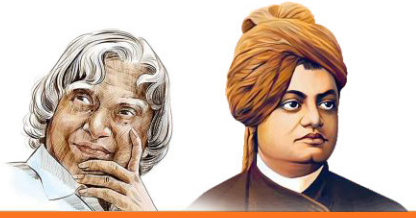

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

व्हाट्सएप एवं संपर्क नं० :-
9458278429

ई मेल :-
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :-
www.missionshikshansamvad.com

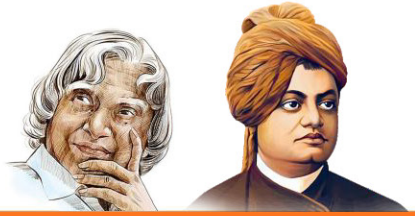

शुभकामना संदेश

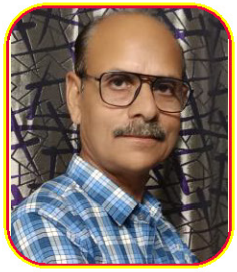

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति लाने के उद्देश्य से समर्पित 'मिशन शिक्षण संवाद' अपनी मासिक पत्रिका 'शिक्षण संवाद' का आगामी अंक प्रकाशित कर रहा है।

शिक्षण केवल एक पेशा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। आज के बदलते परिवेश में, जहाँ तकनीक और नवाचार (Innovation) शिक्षा का अभिन्न अंग बन चुके हैं, मिशन शिक्षण संवाद जैसी पहल सराहनीय है। यह पत्रिका न केवल शिक्षकों के बीच शिक्षण पद्धतियों और नवाचारों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह दूर-दराज के क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की प्रेरक कहानियों और उनके संघर्षों को भी पहचान दिला रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह मासिक पत्रिका ज्ञान के प्रकाश को कोने-कोने तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगी और शिक्षकों के पेशेवर विकास (Professional Development) में मील का पत्थर साबित होगी। सामूहिक प्रयास और संवाद ही शिक्षा की गुणवत्ता में वास्तविक सुधार ला सकते हैं, और यह पत्रिका इस दिशा में एक बेहतरीन सेतु का कार्य कर रही है।

मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल, लेखकों और 'मिशन शिक्षण संवाद' की पूरी टीम को उनकी मेहनत और दूरदर्शिता के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपकी यह रचनात्मक यात्रा निरंतर निर्बाध रूप से चलती रहे और शिक्षा जगत को नई ऊँचाइयों पर ले जाये।

उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएँ!

मो० यामीन,
सहायक अध्यापक,
(राज्य अध्यापक पुरस्कार 2016)
उच्च प्राथमिक विद्यालय बड़ावद (कंपोजिट)
ब्लॉक-बड़ौत, जनपद-बागपत

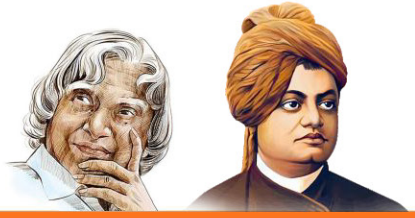

दो शब्द

हम और हमारा मिशन है- 'मनुष्य बनकर मनुष्य के लिए जीना।'

आज के इस तेज़ी से बदलते युग में जब तकनीक, उपभोग और प्रतिस्पर्धा ने मनुष्यता को पीछे छोड़ दिया है, तब ऐसे समय में "मिशन शिक्षण संवाद" हमें याद दिलाता है कि जीवन का असली उद्देश्य केवल सफल होना नहीं, बल्कि सार्थक होना है।

हम और हमारा मिशन वर्षों से यही प्रेरणा देता आ रहा है कि -

"हम सभी मनुष्य स्वस्थ, सुखी, समृद्ध हों तथा जीवन में शान्ति, सम्मान और आनन्द प्राप्त करें।"

पर यह तभी सम्भव है जब हम मनुष्य बनकर मनुष्य के लिए जीना प्रारम्भ करें। यही वह सूत्र है जो भूत, वर्तमान और भविष्य-तीनों कालों को जोड़ता है।

1- भूतकाल से सीखें "मिलकर चलने की शक्ति"

हमारे समाज में आज सबसे बड़ी चुनौती "अकेलापन" है। छोटे-छोटे परिवार, स्वार्थ की सीमाएँ और व्यक्तिगत अभिलाषाएँ हमें समाज से काट रही हैं। मिशन शिक्षण संवाद ने इस विखण्डन के बीच एक नई दिशा "मिशन परिवार" के रूप में दी है।

यह परिवार उन सभी के लिए है जो समझते हैं कि सुख साझा करने से बढ़ता है और दुख बाँटने से घटता है।

2- वर्तमान - "सकारात्मक कर्म का काल"

वर्तमान वह क्षण है जो भूत के परिणामों को मिटाकर भविष्य की संभावनाओं का निर्माण कर सकता है।

मिशन परिवार के सभी सहयोगी बिना किसी भेदभाव, स्वार्थ या प्रतिफल की इच्छा के, स्वैच्छिक सेवा और मानवीय सहयोग की परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। यह सेवा केवल दूसरों की सहायता नहीं, बल्कि आत्मा की उन्नति का भी साधन है।

"जब हम प्रेम, विश्वास और निष्कपट भाव से दूसरों के लिए जीते हैं, तभी हम अपने भीतर के परमात्मा को पहचान पाते हैं।"

3- भविष्य - "उम्मीद के बीज"

भविष्य का उजाला वर्तमान की निष्ठा में छिपा है।

जैसे बीज में पूरा वृक्ष छिपा होता है, वैसे ही आज के सच्चे, निश्छल और मानवीय कर्मों में आने वाले उज्ज्वल कल की संभावनाएँ सिमटी होती हैं।

मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य यही है - हर मनुष्य अपने जीवन को इतना शुद्ध और प्राकृतिक बनाए कि वह स्वयं भी प्रकाश बने और दूसरों के लिए भी दीपक बन जाए।

अतः हमारे मिशन का मूल सार है "मिशन से मनुष्यत्व की ओर" इसलिए मिशन शिक्षण संवाद केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक जीवंत विचारधारा है, जहाँ हर सदस्य नशामुक्त, छल-मुक्त, और स्वार्थ-मुक्त जीवन जीने की प्रतिज्ञा करता है।

यह परिवार उन सभी के लिए खुला है जो केवल अपने लिए नहीं, बल्कि मानवता के लिए जीना चाहते हैं।

"मनुष्य का सच्चा धर्म वही है जो दूसरों के जीवन में मुस्कान का कारण बने।"

इसलिए आइए हम सब मिलकर इस दिव्य मिशन के मासिक संकलन "शिक्षण संवाद" का हिस्सा बनें। जो हमें निरन्तर "मनुष्य बनकर मनुष्य के लिए जीने की अद्भुत राह दिखाता है।

धन्यवाद।

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद

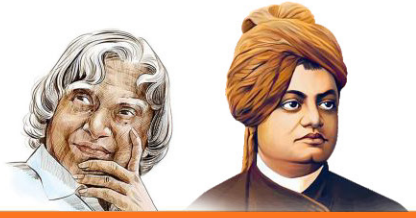

अनुक्रमणिका

मिशन गीत - हमारा मिशन	7
शिक्षक उपलब्धि - प्रतिमा उमराव, जितेन्द्र कुमार	8
विचारशक्ति -AI तकनीक का संतुलित उपयोग ही मानव के लिए हितकारी	9
शैक्षिक गतिविधि - चित्र: दैनिक जीवन में विज्ञान की देन	10
मीना मंच - बालिकाओं की जागरुकता का सशक्त माध्यम	11
दिवस विशेष - जगमग-जगमग दीप जले	12
शैक्षिक तकनीकी - Moodle App	13-18
खेल विशेष - मल्लखंब	19-20
प्रेरक प्रसंग - डॉ. ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम, दुर्गावती भाभी	21-23
टी.एल.एम. - कीटभक्षी/मांसाहारी पादप	24
बाल कहानी - कंजूस सेठ और होनहार पुत्र	25
बाल कविता - गौरैया, बेटियाँ	26-27
बच्चों का कोना - मेला, मेरी प्यारी मैम, दोस्त	28
बाल साहित्य - चंदामामा	29

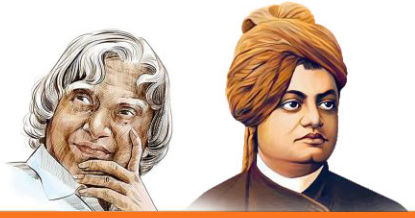

हमारा मिशन

शिक्षा के उत्थान में नित नये,
कीर्तिमान रच रहा मिशन।
मानवता के कल्याण को,
लेकर आगे बढ़ रहा मिशन।।

ईमानदारी से कार्य करना,
हमें सिखा रहा मिशन।
सकारात्मक सोच से निरन्तर, बदलाव ला रहा मिशन।।

कर्तव्य के पथ पर चलना,
हमें सिखा रहा मिशन।
जन समुदाय के सहयोग से, विद्यालय परिवेश सजा रहा मिशन।।

शिक्षक के सम्मान में नित,
नये कदम उठा रहा मिशन।
जन–जन की सोच में देखो,
परिवर्तन ला रहा मिशन।।

छात्रों को मिले गुणवत्तापूर्ण शिक्षा,
परीक्षाओं की तैयारी करा रहा मिशन।
ज्ञान की अविरल धारा देखो, निरंतर बहा रहा मिशन।।

निस्वार्थ सेवा से कार्य करना,
हमें सिखा रहा मिशन।
त्याग, समर्पण और सहयोग भाव,
मन मे जगा रहा मिशन।।

मृदुला वर्मा
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अमरौधा प्रथम,
ब्लॉक-अमरौधा, जनपद-कानपुर देहात

प्रतिमा उमराव

पदनाम: सहायक अध्यापक
विद्यालय: कम्पोजिट विद्यालय अमोली
ब्लॉक: अमौली
जनपद: फतेहपुर

पुरस्कार/सम्मान

बेसिक शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार परिषदीय विद्यालयों में अध्यनरत बच्चों को आई०सी०टी (इनफॉरमेशन कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी), कंप्यूटर शिक्षा से जोड़ने के लिए, नामांकन वृद्धि, उपस्थिति एवं ठहराव हेतु शिक्षकों के बीच में आईसीटी की नवीन तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फतेहपुर में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई प्रतियोगिता में महिला वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली शिक्षिका प्रतिमा उमराव, कम्पोजिट विद्यालय अमौली, अमौली से हैं।

जितेन्द्र कुमार

पदनाम: सहायक अध्यापक
विद्यालय: पी.एम.श्री प्राथमिक विद्यालय धनौरा सिल्वर नगर न.-1
ब्लॉक: बागपत
जनपद: बागपत

पुरस्कार/सम्मान

पी एम श्री प्राथमिक विद्यालय धनौरा सिल्वर नगर न०1, विकास क्षेत्र– बागपत, जनपद– बागपत के शिक्षक जितेन्द्र कुमार ने जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बड़ौत में आयोजित जनपद स्तरीय आई सी टी प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने अपने द्वारा विद्यालय में किए जा रहे आई सी टी आधारित शिक्षण अधिगम संबंधित नवाचारों का पी पी टी के माध्यम से प्रस्तुतिकरण किया। उनके आई सी टी आधारित उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

AI तकनीक का संतुलित उपयोग ही मानव के लिए हितकारी

ए०आई० (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) तकनीक का उपयोग आज लगभग हर क्षेत्र में हो रहा है। ए०आई० तकनीक का संतुलित उपयोग ही मानव के लिए हितकारी होगा। बच्चों, इस विषय पर संक्षिप्त चर्चा करते हुए इस तकनीक की जानकारी से अवगत होते है।

ए०आई० के उपयोग

1. शिक्षा के क्षेत्र में – स्मार्ट ट्यूटर, स्वचालित उत्तर मूल्यांकन, पर्सनल लर्निंग।
2. स्वास्थ्य क्षेत्र में – रोगों का निदान, दवा खोज, ऑपरेशन में सहायता।
3. व्यापार क्षेत्र में – ग्राहक सेवा (चौटबॉट्स), डाटा विश्लेषण, धोखाधड़ी की पहचान।
4. कृषि क्षेत्र में – फसल रोग की पहचान, मौसम का पूर्वानुमान, स्मार्ट खेती।
5. परिवहन के क्षेत्र में – सेल्फ–ड्राइविंग कार, ट्रैफिक प्रबंधन।
6. घरेलू उपयोग – वॉइस असिस्टेंट (जैसे– Alexa, Siri), स्मार्ट डिवाइस।

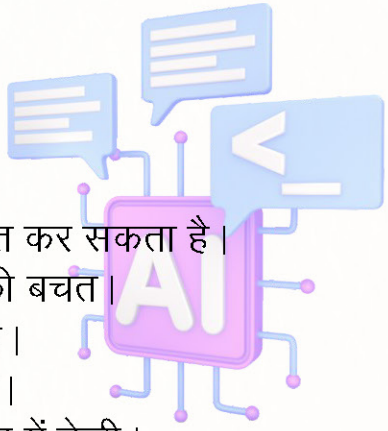

ए०आई० तकनीक के लाभ

1. तेज़ और सटीक निर्णय – बड़ी मात्रा में डेटा को कुछ ही सेकंड में विश्लेषित कर सकता है।
2. दैनिक कार्यों का स्वचालन – दोहराए जाने वाले कामों में समय और श्रम की बचत।
3. मानव त्रुटि में कमी – मशीनें थकती नहीं, इसलिए सटीकता अधिक होती है।
4. लागत में कमी –लंबे समय तक मशीनों से काम कराने से खर्च कम होता है।
5. नई खोजों में मदद – मेडिकल रिसर्च, स्पेस साइंस और टेक्नोलॉजी विकास में तेजी।

ए०आई० द्वारा संभावित हानियाँ

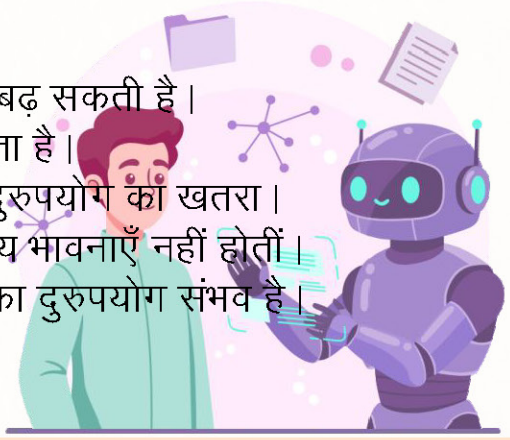

1. रोज़गार पर असर – कोई काम मशीनें करने लगें तो बेरोज़गारी बढ़ सकती है।
2. निर्भरता – अधिक उपयोग से इंसान तकनीक पर निर्भर हो सकता है।
3. नैतिक चुनौतियाँ – डेटा प्राइवेसी, गलत सूचना का प्रसार और दुरुपयोग का खतरा।
4. रचनात्मकता की कमी – मशीनें प्रोग्रामिंग तक सीमित हैं, मानवीय भावनाएँ नहीं होतीं।
5. सुरक्षा जोखिम – हैकिंग, साइबर अपराध और युद्ध में ए०आई० का दुरुपयोग संभव है।

निष्कर्ष

ए०आई० तकनीक मानव जीवन को आसान और बेहतर बना सकती है, लेकिन इसके साथ नैतिकता, गोपनीयता और रोजगार जैसी चुनौतियाँ भी हैं। इसका संतुलित और जिम्मेदार उपयोग ही मानवता के लिए लाभकारी होगा।

आनन्द नारायण पाठक 'अभिनव'
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय खवाकीमई,
ब्लॉक-कड़ा, जनपद-कौशाम्बी

चित्र: दैनिक जीवन में विज्ञान की देन

दैनिक जीवन में विज्ञान के योगदान का चित्र बनाते समय, लाभ में संचार, परिवहन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में प्रगति और सुविधा शामिल हैं। सावधानियों में पर्यावरण पर प्रभाव, स्वास्थ्य के लिए खतरे और तकनीकी निर्भरता से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के बारे में सोच–विचार करना चाहिए। चित्र बनाते समय, इन दोनों पहलुओं को संतुलित रूप से दर्शाना महत्वपूर्ण है।

लाभ

1. संचार– मोबाइल फोन और इंटरनेट जैसी विज्ञान की देन संचार को आसान बनाती है।

2.परिवहन– कार, बाइक और रेलगाड़ी जैसे परिवहन के साधनों से यात्रा सुखद और तेज हो गई है।

3.स्वास्थ्य– चिकित्सा विज्ञान ने बीमारियों के उपचार संभव किए हैं, जिससे जीवन प्रत्याशा बढ़ी है।

4.शिक्षा– विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को सुलभ बनाया है और समझ के नए तरीके खोले हैं।

5.सुविधा– घर के काम जैसे खाना पकाना, कपड़े धोना और इस्त्री करना विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारण आसान हो गए हैं।

6.सुरक्षा– विज्ञान हमें प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणी करने और उनसे बचाव के उपाय करने में मदद करता है।

शमा परवीन
अनुदेशक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय टिकोरा मोड,
जनपद-बहराइच

बालिकाओं की जागरूकता का सशक्त माध्यम

आज के समय में बालिकाओं का जागरूक होना बहुत जरूरी है। जब बालिकाएं अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझेंगी, तभी वे अपने जीवन को बेहतर दिशा दें पाएंगी। इसी उद्देश्य से कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में मीना मंच का संचालन किया जाता है। यह मंच बालिकाओं को जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मीना मंच के माध्यम से बालिकाओं को स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, शिक्षा का महत्व, बाल अधिकार, बाल विवाह, लैंगिक समानता और आत्मरक्षा जैसे विषयों की जानकारी दी जाती है। मीना मंच के अंतर्गत समय-समय पर विद्यालय में बैठक, चर्चा सत्र, भाषण,पोस्टर बनाना, नाटक और सामूहिक गतिविधियाँ कराई जाती हैं। इन गतिविधियों से बालिकाएं बहुत कुछ सीखती हैं और उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

इस मंच का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि अब बालिकाएं अपनी बात खुलकर कहना सीख गई हैं। वे गलत बातों के खिलाफ आवाज उठाना सीख रहीं हैं और अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई हैं। वे दूसरों को भी शिक्षा, स्वच्छता और अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करती हैं।

मीना मंच से बालिकाओं में नेतृत्व की भावना का भी विकास हुआ है। वे समूह में कार्य करना, एक दूसरे की मदद करना और जिम्मेदारी लेना सीख रही हैं। इससे उनका सर्वांगीण विकास हो रहा है।

अंत में हम यह कह सकते है कि मीना मंच ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की बालिकाओं में नई सोच और जागरूकता पैदा की है। इस मंच के माध्यम से बालिकाएं आत्मविश्वासी, जागरूक और आत्मनिर्भर बन रही हैं। यह उनके उज्ज्वल भविष्य की ओर एक मजबूत कदम है।

दीपिका राजपूत
सहायक अध्यापक,
के. जी.बी. वी. पिवारी
ब्लॉक-मारहरा, जनपद-एटा

जगमग-जगमग दीप जले

जगमग जगमग दीप जले, हाथों में पूजा की थाली हो।
मां लक्ष्मी की कृपा बरसे, घर–आंगन में खुशहाली हो।।
सुख ही सुख हो जीवन में, दुःखों की रात न काली हो।
जगमग जगमग दीप जले, घर–आंगन में खुशहाली हो।।

रहे न कोई भूखा–नंगा, भोजन से भरी हर थाली हो।
जगमग जगमग दीप जले, घर–आंगन में खुशहाली हो।।
धन–दौलत से भरी हो झोली, जेब किसी की न खाली हो।
जगमग जगमग दीप जले, घर–आंगन में खुशहाली हो।।

होठों पर हो गीत खुशी के, मदमस्त हर इक प्राणी हो।
जगमग जगमग दीप जले, घर–आंगन में खुशहाली हो।।
फूल खिलें खुशियों के, महकती जीवन फुलवारी हो।
जगमग जगमग दीप जले, घर–आंगन में खुशहाली हो।।

मनोकामनाएं हो सब पूरी, आशा कोई न खाली हो।
जगमग जगमग दीप जले, घर–आंगन में खुशहाली हो।।
दिन हो रंग–बिरंगी होली, हर रात नई दिवाली हो।
जगमग जगमग दीप जले, घर–आंगन में खुशहाली हो।।

प्रेम भाव हो हर इक दिल में, जीवन वैभवशाली हो।
सुखमय हो जीवन सबका, घर–आंगन में खुशहाली हो।।

सुनील कुमार
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अड़गोड़वा(1-8),
ब्लॉक-मिहींपुरवा, जनपद-बहराइच

Moodle App

Moodle App क्या है?

Moodle का आधिकारिक मोबाइल ऐप—

✔ Moodle Mobile
✔ iOS/Android दोनों पर उपलब्ध है

Moodle (Modular Object-Oriented Dynamic Learning Environment) एक ओपन सोर्स (Free) Learning Management System है जिसे दुनिया भर के स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और ट्रेनिंग संस्थान उपयोग करते हैं।

✔ यह पूरी तरह मुफ़्त है।
✔ इसे अपने अनुसार कस्टमाइज़ किया जा सकता है।
✔ ऑनलाइन कोर्स, टेस्ट, सामग्री साझा करना, रिपोर्ट –सब एक ही जगह

Moodle की मुख्य विशेषताएँ (Key Features)

1. Course Creation (कोर्स बनाना):

शिक्षक अपने विषय के अनुसार अलग–अलग कोर्स बना सकते हैं।
यूनिट, टॉपिक और लेसन जोड़ सकते हैं।
प्रत्येक विषय के लिए अलग स्टडी मैटेरियल और गतिविधियाँ बनती हैं।

2. Content Sharing (सामग्री अपलोड करना):

आप Moodle में यह सब अपलोड कर सकते हैं–

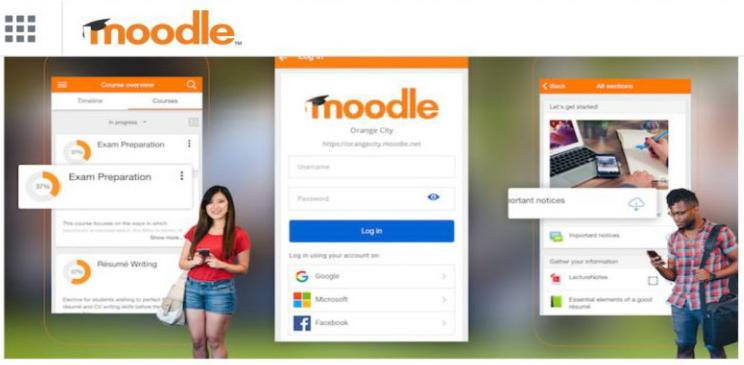

- PDF
- PPT
- Word files
- Images
- YouTube वीडियो
- Links
- Interactive content (H5P)

छात्र इसे कभी भी डाउनलोड और देख सकते हैं।

3. Assignment Module (असाइनमेंट देना):

- Word, PDF या फोटो के रूप में छात्रों से उत्तर जमा करवाना।
- अंतिम तिथि सेट करना।
- ऑटो–ग्रेडिंग की सुविधा।
- फीडबैक देना।

4. Quiz & Test (परीक्षा प्रणाली):

Moodle की सबसे मज़बूत विशेषताओं में से एक– Quiz Module

आप निम्न प्रकार के प्रश्न बना सकते हैं–

- MCQ
- Fill in the blanks
- True/False
- Matching
- Short answer
- Numerical
- Essay
- ऑटो–ग्रेडिंग
- निगरानी (Timing, Attempts, Restrictions)

Question Bank तैयार कर सकते हैं।

5. Communication Tools (संवाद):

- फ़ोरम (Discussion Board)
- ग्रुप चैट
- Announcement
- Messaging
- छात्र शिक्षक संवाद बहुत आसान।

6. Tracking & Reports (प्रगति रिपोर्ट):

Moodle शिक्षक और प्रशासन को यह दिखाता है–

- कौन छात्र कितनी बार लॉगिन करता है।
- कौन–सा अध्याय पूरा किया गया।
- क्विज़ प्रदर्शन
- ग्रेड बुक
- समग्र रिपोर्ट

7. Attendance Module (उपस्थिति):

- ऑनलाइन/ऑफलाइन उपस्थिति
- Attendance report
- स्वचालित प्रतिशत

8. Plugins Support (हज़ारों ऐड-ऑन)

Moodle में आप किसी भी कार्य के लिए plugin जोड़ सकते हैं –

- Zoom integration
- Google Meet integration
- YouTube embed
- H5P content
- Gamification (Badges, points)
- AI-supported grading
- Fees management (3rd party)

Moodle किसके लिए उपयोगी है?

स्कूल

- कॉलेज/विश्वविद्यालय
- कोचिंग संस्थान
- व्यक्तिगत शिक्षक

अपने ऑनलाइन कोर्स बेच सकते हैं। (plugin के साथ)

Moodle के लाभ :

- ओपन सोर्स (Free): कोई लाइसेंस शुल्क नहीं।
  Highly Customizable: स्कूल/कॉलेज अपनी जरूरत अनुसार बदल सकते हैं।
- मजबूत परीक्षा प्रणाली: टाइम्ड, रीटेक, ऑटो-ग्रेडिंग।
- सुरक्षा डेटा सुरक्षित रहता है।
- मोबाइल ऐप सपोर्ट: छात्रों की सुविधा

Moodle की सीमाएँ :

- बहुत सारे फीचर्स होने के कारण शुरुआत में कठिन लगता है।
- सर्वर सेटअप की जरूरत: होस्टिंग, डोमेन, इंस्टॉलेशन।
- शिक्षक प्रशिक्षण आवश्यक: कोर्स बनाना, क्विज़ सेट करना सीखना पड़ता है।

1. Moodle में कोर्स कैसे बनाएं (Step-by-Step Guide):

Step 1: लॉगिन करें

1. अपने Moodle साइट URL पर जाएँ।
2. Username + Password डालकर लॉगिन करें।
3. Dashboard खुल जाएगा।

Step 2: **नया कोर्स बनाएं**

1. Site administration पर जाएँ।
2. Courses → Add a new course
3. कोर्स का नाम लिखें।

Full name: उदाहरण "Mathematics Class 8"

Short name: "Maths-8"

Step 3: **कोर्स सेटिंग करें**

1. Course category चुनें (जैसे- Class 8, Science section)
2. Course start date
3. Course visibility (Show/Hide)
4. Course summary लिखें

Step 4: **कोर्स फॉर्मेट चुनें**

1. Weekly format (सप्ताहवार)
2. Topic format (अध्यायवार – सबसे लोकप्रिय)
3. Topics की संख्या चुनें

Step 5: **शिक्षक जोड़ें**

1. Users → Enrolled users → Enrol users
2. Role: Teacher या Student

Step 6: **सामग्री जोड़ना**

1. Turn editing ON करें →
2. Add an activity or resource पर क्लिक करें
3. आप इन संसाधनों को जोड़ सकते हैं-

- File (PDF, PPT, Notes)
- Page
- URL (YouTube वीडियो)
- Folder
- Assignment
- Quiz
- Book (अध्याय जैसे eBook)
- H5P activities

अब आपका पूरा कोर्स तैयार !

2. Moodle में क्विज़ कैसे बनाएं (Step-by-Step):

Step 1: **कोर्स खोलें**

Turn editing ON करें

Step 2: **क्विज़ जोड़ें**

1. Add an activity or resource
2. Quiz चुनें
3. Quiz का नाम लिखें (जैसे– "Chapter 1 – Test")

Step 3: **Quiz settings**

1. Time limit: 20 मिनट
2. Attempts allowed: 1 या 2
3. Shuffle questions: Yes
4. Pass grade: 40/100 (या जैसा चाहें)

Step 4: **प्रश्न जोड़ें**

1. Save करें →
2. Edit quiz → Add →
3. New question

प्रश्न प्रकार:

- Multiple choice
- True/False
- Short answer
- Matching
- Numerical
- Essay

4. अंक दें
5. सही उत्तर सेट करें
6. फीडबैक जोड़ें

Step 5: **Preview Quiz**

1. Preview में जाकर Quiz चलाकर देखें।
2. Publish कर दें।
3. अब छात्र Quiz दे सकते हैं।

Moodle App

3. Moodle मोबाइल ऐप से कक्षा कैसे चलाएँ:

Step 1: **Moodle App डाउनलोड करें**

1. Play Store/App Store
2. Moodle ऐप खोलें

Step 2: **साइट URL डालें**

1. आपकी संस्था द्वारा दिया गया Moodle address डालें
2. जैसे- schoolname.moodlecloud.com

Step 3: **लॉगिन**

Username + Password

Step 4: **कोर्स एक्सेस**

1. आपके सभी कोर्स Dashboard में दिखेंगे
2. किसी भी कोर्स पर क्लिक करें

Step 5: **ऐप से पढ़ाना**

1. आप कर सकते हैं-
   - सामग्री अपलोड
   - फ़ाइल डाउनलोड
   - फ़ोरम में चर्चा
   - Assignment चेक
   - Quiz देखना
   - Students की progress देखना
   - Notification भेजना

Step 6: **लाइव क्लास**

Zoom/Google Meet प्लगिन इंस्टॉल होने पर-

कोर्स → Activity → Zoom meeting

Automatically join from app

जितेन्द्र कुमार
सहायक अध्यापक,
पी०एम०श्री प्रा०वि० धनौरा सिल्वर नगर न०1
ब्लॉक-बागपत, जनपद-बागपत

मल्लखंब

यह भारत का एक प्राचीन और पारंपरिक खेल है, जो योग, कुश्ती और जिमनास्टिक का मिश्रण है, जिसमें खिलाड़ी एक ऊर्ध्वाधर लकड़ी के खंभे (पोल) या रस्सी पर शक्ति, संतुलन और लचीलेपन का प्रदर्शन करते हैं; यह शब्द 'मल्ल' (पहलवान) और 'खंब' (खंभा) से बना है और पहलवानों के प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल होता था, जो अब एक लोकप्रिय खेल है, खासकर महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में, जिसे 2013 में मध्य प्रदेश का राजकीय खेल घोषित किया गया था।

मल्लखंब की मुख्य बातें :

अर्थ : 'मल्ल' (पहलवान/योद्धा) और 'खंब' (खंभा) – यानी पहलवानों का खंभा।

उद्देश्य : शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति, संतुलन, एकाग्रता और लचीलेपन का विकास करना।

कैसे खेला जाता है : खिलाड़ी एक लकड़ी के खंभे या रस्सी पर योग और जिम्नास्टिक की विभिन्न मुद्राएं (आसन) करते हैं, जिनमें कुश्ती की पकड़ (holds) भी शामिल होती है।

प्रकार :

पोल मल्लखंब (Pole Mallakhamb) : एक स्थिर खंभे पर किया जाता है।

रोप मल्लखंब (Rope Mallakhamb) : एक लटकी हुई रस्सी का उपयोग होता है, जो अधिक कठिन होता है।

इतिहास : इसके शुरुआती प्रमाण दूसरी–पहली शताब्दी ईसा पूर्व के मिट्टी के बर्तनों में मिलते हैं। 12वीं सदी के 'मानसोल्लास' ग्रंथ में इसका पहला साहित्यिक उल्लेख है।

पुनरुद्धार : 19वीं सदी में बालासाहेब तांबे और भगवतचंद्र वाडेकर ने इसे पुनर्जीवित किया, और यह धीरे–धीरे महाराष्ट्र से पूरे भारत में फैला।

मल्लखंब में किए जाने वाले अभ्यास :

- चढ़ना और उतरना
- लटकना
- घूमना
- संतुलन बनाना
- उल्टे आसन
- योगिक मुद्राएँ

ये सभी क्रियाएँ शक्ति, लचीलापन और नियंत्रण विकसित करती हैं।

मल्लखंब के उपकरण :

- लकड़ी का खंभा (शीशम या सागौन)
- मोटी सूती रस्सी
- तेल या पाउडर (घर्षण कम करने हेतु)
- मिट्टी या रबर की जमीन

मल्लखंब

मल्लखंब के लाभ :

शारीरिक लाभ :

- मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।
- लचीलापन और संतुलन बढ़ाता है।
- सहनशक्ति और फुर्ती विकसित करता है।

मानसिक लाभ :

- एकाग्रता बढ़ाता है।
- आत्मविश्वास में वृद्धि करता है।
- भय और तनाव को कम करता है।

नैतिक एवं सामाजिक लाभ :

- अनुशासन और धैर्य सिखाता है।
- साहस और आत्मनियंत्रण विकसित करता है।
- टीम भावना और खेल भावना बढ़ाता है।

मल्लखंब और योग का संबंध :

- मल्लखंब में अनेक योगासनों का प्रयोग होता है।
- इसे योग का गतिशील रूप भी कहा जाता है।
- यह शरीर और मन के समन्वय को मजबूत करता है।

मल्लखंब प्रतियोगिताएँ :

- विद्यालय, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएँ होती हैं।
- Mallakhamb Federation of India द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।
- वर्तमान में यह खेल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचाना जा रहा है।

महत्व :

यह प्राचीन मार्शल आर्ट का हिस्सा है, जिसका उपयोग योद्धाओं को प्रशिक्षित करने के लिए किया जाता था, और अब यह एक खेल के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बना रहा है।

जितेन्द्र कुमार
सहायक अध्यापक,
पी०एम०श्री प्रा०वि० धनौरा सिल्वर नगर न०1
ब्लॉक-बागपत, जनपद-बागपत

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

देश के करोड़ों युवाओं के प्रेरणा स्रोत डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जी अपनी सौम्यता एवं सरलता के लिए प्रसिद्ध थे। जिन्हें मिसाइल मैन और जनता के राष्ट्रपति के नाम से जाता हैं। वे भारतीय गणतन्त्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रख्यात वैज्ञानिक और अभियन्ता के रूप में विख्यात थे। उन्होंने सिखाया जीवन में चाहें जैसे भी परिस्थिति क्यों न हो पर जब आप अपने सपने को पूरा करने की ठान लेते हैं तो उन्हें पूरा करके ही रहते हैं।

डॉ. कलाम का जीवन प्रेरणाओं से भरा हुआ था। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अत्यंत साधारण परिवेश से उठकर भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति तक का सफर तय किया। वे न केवल एक महान वैज्ञानिक और मिसाइल मैन थे, बल्कि एक अद्भुत शिक्षक, लेखक और युवाओं के पथप्रदर्शक भी थे। उनके जीवन के कई प्रेरक प्रसंग हैं जो हमें संघर्ष, ईमानदारी, अनुशासन और सकारात्मक सोच का पाठ पढ़ाते हैं।

डा. कलाम के प्रेरक प्रसंग

प्रेरक प्रसंग–1 : "अभावों में आत्मबल का विकास"

प्रसंग का विवरणः अब्दुल कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम नामक छोटे से गाँव में एक गरीब मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनके पिता नाव चलाते थे और आर्थिक स्थिति बहुत सामान्य थी। पढ़ाई के प्रति कलाम का रुझान बचपन से ही था, लेकिन संसाधनों की कमी थी। एक बार स्कूल की पढ़ाई के दौरान उनकी फीस भरने के लिए घर में पैसे नहीं थे। तब उन्होंने अखबार बाँटने का काम शुरू किया। सुबह–सुबह अखबार बाँटकर वे स्कूल जाते। पढ़ाई में वे सदैव अव्वल रहते।

सीख : कठिनाइयाँ व्यक्ति की राह नहीं रोकतीं, अगर उसके इरादे मजबूत हों। अभाव में ही आत्मनिर्भरता, अनुशासन और मेहनत करने की प्रेरणा मिलती है। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता, मेहनत का कोई विकल्प नहीं।

प्रेरक प्रसंग–2 : "डॉ. विक्रम साराभाई से सीख"

प्रसंग का विवरण : जब अब्दुल कलाम इसरो में काम कर रहे थे,एक बार एक रॉकेट प्रोजेक्ट में देरी हो गई और इसकी आलोचना संसद में हुई। जब प्रधानमंत्री ने इस पर नाराजगी जताई, तब डॉ. विक्रम साराभाई ने पूरी जिम्मेदारी खुद ले ली। लेकिन जब वही प्रोजेक्ट सफल हुआ,तो उन्होंने पूरी सफलता का श्रेय कलाम और उनकी टीम को दिया।

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

सीख : एक सच्चे नेता की पहचान संकट में सामने आती है। जब असफलता हो, तो नेतृत्वकर्ता आगे आकर जिम्मेदारी ले और जब सफलता मिले तो श्रेय टीम को दे। यह घटना कलाम के जीवन में नेतृत्व और विनम्रता की नींव बनी।

प्रेरक प्रसंग–3 : "राष्ट्रपति बनने के बाद भी सादगी"

प्रसंग का विवरण : राष्ट्रपति बनने के बाद भी अब्दुल कलाम ने अपनी सादगी नहीं छोड़ी। वे स्वयं अपने बैग पैक करते थे, बच्चों से मिलना पसंद करते थे और अपना वेतन दान कर दिया करते थे। एक बार एक होटल में ठहरने के दौरान उन्होंने आलीशान कमरे की जगह एक साधारण कमरा माँगा, क्योंकि वे फिजूलखर्ची के खिलाफ थे।

सीख : पद बड़ा होने से व्यक्ति महान नहीं होता, बल्कि उसके विचार और व्यवहार उसे महान बनाते हैं। सादगी, ईमानदारी और सेवा भाव, सच्चे नेतृत्व के गुण होते हैं।

प्रेरक प्रसंग–4 : "छात्रों के लिए समर्पण"

प्रसंग का विवरण : एक बार अब्दुल कलाम एक कार्यक्रम में छात्रों को संबोधित करने जा रहे थे। रास्ते में उनके स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ी हुई, लेकिन उन्होंने छात्रों से मिलने का कार्यक्रम रद्द नहीं किया। वे बोले "जब युवा मेरा इंतजार कर रहे हों,तो मैं कैसे रुक सकता हूँ?"

सीख : युवा पीढ़ी के प्रति उनका समर्पण अद्वितीय था। जब तक शरीर साथ दे, तब तक समाज और देश के लिए कुछ करते रहना चाहिए।

निष्कर्ष

डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जीवन सच्चे अर्थों में प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने अपने विचारों, कार्यों और जीवनशैली से यह सिद्ध किया कि अगर इंसान में जुनून हो, उद्देश्य स्पष्ट हो और आत्मबल हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। उनके जीवन से हम ये प्रमुख बातें सीख सकते हैं –

- सपने देखो और उन्हें सच करने के लिए मेहनत करो।
- असफलताओं से घबराओ नहीं, उनसे सीखो।
- सादा जीवन, उच्च विचार को अपनाओ।
- ज्ञान बाँटने से बढ़ता है हमेशा दूसरों को प्रेरित करो।

रविन्द्र कुमार पटेल
सहायक अध्यापक,
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ,
ब्लॉक-औराई, जनपद-भदोही

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की क्रान्तिकारी नायिका: दुर्गा भाभी

क्रान्तिकारी दुर्गा भाभी, जिनका वास्तविक नाम दुर्गावती देवी था, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक साहसी और प्रेरणादायक महिला क्रान्तिकारी थीं। उन्होंने न केवल पुरुष क्रान्तिकारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया, बल्कि कई ऐतिहासिक घटनाओं में निर्णायक भूमिका भी निभाई।

दुर्गावती देवी का जन्म 7 अक्टूबर 1907 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (प्रयागराज) में हुआ था। वे बचपन से ही निर्भीक, आत्मसम्मानी और देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थीं। उस समय समाज में महिलाओं की भूमिका सीमित मानी जाती थी, किंतु दुर्गा भाभी ने इस धारणा को तोड़ने का साहस दिखाया। उनका विवाह क्रान्तिकारी भगवती चरण वोहरा से हुआ, जो हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के सक्रिय सदस्य थे। विवाह के बाद दुर्गा भाभी सीधे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़ गईं। वे क्रान्तिकारियों को आश्रय देने, संदेश पहुँचाने और धन व हथियारों का संग्रह जैसे कार्यों में सक्रिय रहीं।

प्रसंग-1 1928 में सॉन्डर्स वध के बाद दुर्गा भाभी ने भगत सिंह को अंग्रेजों से बचाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। वे भगत सिंह के साथ उनकी पत्नी बनकर, एक बच्चे (सचिन्द्रनाथ सान्याल का पुत्र) के साथ लाहौर से कलकत्ता तक रेल यात्रा में गईं। इस साहसिक योजना से भगत सिंह अंग्रेजी पुलिस की पकड़ से बच निकले। यह घटना दुर्गा भाभी की बुद्धिमत्ता, साहस और देशभक्ति का अद्भुत उदाहरण है।

प्रसंग-2 1929 में दुर्गा भाभी ने लाहौर में अंग्रेज अधिकारी सर जॉन सॉन्डर्स के सहायक टेलर पर गोली चलाई। यह घटना ब्रिटिश शासन के विरुद्ध उनके सशस्त्र प्रतिरोध का प्रमाण थी। यद्यपि अधिकारी बच गया, लेकिन इस घटना से अंग्रेज प्रशासन में भय व्याप्त हो गया। टेलर पर गोली चलाने के अपराध में दुर्गा भाभी को अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार कर लिया और उन्हें तीन वर्ष का कारावास हुआ। जेल में रहते हुए भी उनका क्रान्तिकारी उत्साह कम नहीं हुआ। उन्होंने कारावास को भी राष्ट्रसेवा का माध्यम माना । यह उनके लौह व्यक्तित्व का ही प्रमाण था कि अनेकों यातनाएं सहकर भी किसी क्रान्तिकारी साथी का भेद नहीं खोला ।

प्रसंग-3 1930 में उनके पति भगवती चरण वोहरा बम परीक्षण के दौरान शहीद हो गए। यह दुर्गा भाभी के जीवन का अत्यंत दु:खद क्षण था। पति की शहादत के बाद भी उन्होंने क्रान्तिकारी विचारों को नहीं छोड़ा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दुर्गा भाभी ने सक्रिय राजनीति से दूरी बना ली। उन्होंने लखनऊ में गरीब बच्चों को शिक्षा देने और महिलाओं तथा गरीबों को चिकित्सकीय सहायता देने जैसे समाजसेवी कार्यों से राष्ट्रसेवा का अपना व्रत निरंतर बनाए रखा । दुर्गा भाभी प्रचार से दूर रहने वाली एक सच्ची राष्ट्रसेविका थीं, उनका जीवन सादगी, सेवा और त्याग का उदाहरण बना रहा।

15 अक्टूबर 1999 को गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में दुर्गा भाभी का निधन हुआ। वे अंतिम समय तक गुमनाम-सा जीवन जीती रहीं, किंतु उनका योगदान भारतीय इतिहास में अमर है।

क्रान्तिकारी दुर्गा भाभी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नारी शक्ति, साहस और त्याग की प्रतीक थीं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता की लड़ाई केवल पुरुषों की नहीं, बल्कि महिलाओं की समान भागीदारी से ही संभव हुई। उनका जीवन आज भी युवाओं और विशेषकर महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

जितेन्द्र कुमार तिवारी
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय भटपुरा,
ब्लॉक-बढ़पुरा, जनपद-इटावा

कीटभक्षी/मांसाहारी पादप

कक्षा– प्राथमिक / जूनियर स्तर

विषय– विज्ञान(पौधों में पोषण)

आवश्यक सामग्री– रंगीन पेपर, टिश्यू पेपर, रंग,तार, छोटी प्लास्टिक बोतल, ऊन, टेप, गोंद आदि।

उपयोगिता–

1. इस TLM के माध्यम से बच्चों में कुछ कीटभक्षी पौधे जैसे घटपर्णी, ड्रोसेरा, ब्लैडरवॉर्ट, वीनस फ्लाई ट्रैप की संरचना की समझ विकसित होती है।
2. बच्चे कीटभक्षी पौधों की कीट पकड़ने की प्रक्रिया तथा पोषण के तरीके को समझ पाते हैं।
3. बच्चों में देखने,समझने व सोचने की क्षमता का विकास होता है तथा जीव– विज्ञान और पर्यावरण के प्रति समझ विकसित होती है।

श्रीमती वन्दना सिंह
सहायक अध्यापक,
कम्पोज़िट विद्यालय बँसहिया,
ब्लॉक-गौरी बाजार, जनपद-देवरिया

कंजूस सेठ और होनहार पुत्र

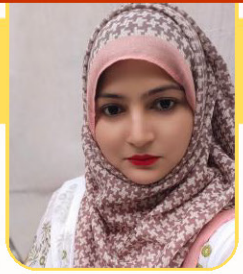

सेठ गोविंद दास के चार पुत्र थे। उन चारों में तीसरा बेटा मोहित पढ़ाई में सबसे ज्यादा होशियार था। वो कक्षा में हमेशा प्रथम आता। उसकी लिखावट बहुत सुंदर थी। मोहित का सपना था कि वो बड़ा होकर डॉक्टर बनेगा। इण्टर की परीक्षा के बाद जब मोहित को मेडिकल की तैयारी के लिए जाना था तो कंजूस सेठ ने पैसे देने से साफ मना कर दिया। उसने अपने बेटे मोहित से स्पष्ट कह दिया कि अब वो आगे की पढ़ाई के लिए कोई पैसा खर्च नहीं करेंगे।

मोहित बहुत परेशान हो गया। अपने पिता जी को मनाने की बहुत कोशिश की लेकिन गोविंद दास बिल्कुल भी नहीं पसीजा। उसने अपना फैसला सुना दिया, "पढ़ना है तो पहले कमाओ, उसके बाद पढ़ लेना।"

मोहित अपने पिता की जिद के आगे हारकर पैसा कमाने चल दिया। उसने प्राइवेट विद्यालय में पढ़ाना आरंभ कर दिया। फिर शाम को घर पर बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता। धीरे–धीरे बच्चों की संख्या ट्यूशन पर बढ़ने लगी। अब मोहित बहुत व्यस्त हो गया था। उसके पास अपनी पढ़ाई के लिए समय नहीं बच पा रहा था। बच्चों को पढ़ाना उसे अब अच्छा लगने लगा। उसके पढ़ाए हुए बच्चों का चयन मेडिकल और इंजीनियरिंग में होने लगा।

कुछ समय पश्चात अचानक कंजूस सेठ की तबियत खराब हो गई। उसको अस्पताल में भर्ती कराया गया। उनकी जाँच में डॉक्टर ने बीस हजार रूपए का खर्च बताया। खर्च की बात सुनते ही रमन सेठ बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। मोहन से बोला, "अरे! इतने रुपए...मुझे जाँच नहीं करानी...मुझे घर ले चलो।"

इतने में डॉक्टर वहाँ आता है। मोहित को देखते ही डॉक्टर बोल पड़ा, "सर आप...यहाँ कैसे?" डॉक्टर मोहित का विद्यार्थी था। उसने झट मोहित को पहचान लिया। मोहित ने उसको अपने पिता जी के बारे में सारी बात बताई। सारा हाल जानने के बाद डॉक्टर ने सारी जाँच और इलाज मुफ्त कर दिया।

मोहित ने जो सपना अपने लिए देखा था वो अपने विद्यार्थी में देख कर बहुत खुश हुआ। उसे लगा कि आज उसका सपना साकार हो गया। सेठ को भी अपनी कंजूसी पर बहुत पछतावा हुआ। उसको एहसास हुआ कि अगर उसने अपने बेटे की पढ़ाई पर पैसे खर्च किया होता तो वो भी आज डॉक्टर बन जाता।

संस्कार संदेश

अगर बच्चों में पढ़ने और आगे बढ़ने का जजूबा है, तो उनको अवश्य पढ़ाना चाहिए।

रुखसार परवीन
सहायक अध्यापक,
संविलयित विद्यालय गजपतिपुर,
जनपद-बहराइच

गौरैया

सर ने जिले का नाम था पूछा; हमने बोला औरैया।।
अपने जिले का पक्षी बताओ, बोलो–बोलो ओ भैया।।

छोटी–छोटी आँखें उसकी, छोटी सी है चोंच,
और जरा सी पूँछ है उसकी, नाम बताओ सोच,

है इतनी सी वो चिड़िया, जितना खिलौने का ये पहिया,
भूरा काला रंग है उसका, पंख भी उसके अच्छे,

नहीं घोंसले में देखे कभी तीन से ज्यादा बच्चे,
कीड़े –मकोड़े, रोटी, चावल और खा लेती लहिया।।

चूँ– चूँ करती घर में आती, देखी तो होगी ही,
तिनका– तिनका नीड़ बनाती, देखी तो होगी ही,
कुछ ऐसे लगती जैसे; हो कोई पंखों वाली चुहिया।।

हम ही बता दें आप तो पहले हारी बोलो भैया,
अपने जिले के पक्षी का तो नाम है जी– **'गौरैया'**

आदर्श कुमार द्विवेदी
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय पुर्वा भवानी,
जनपद-औरैया

बेटियाँ

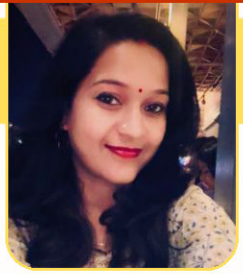

हुआ आगमन लक्ष्मी जी का, घर में मची है धूम,
है चहुँओर चहकते पापा, सबको बताते घूम–घूम।
किलकारी गूँजती घर आँगन में, माँ का बड़ा है मान,
पापा को दिया तोहफा माँ ने, है बड़ा उनका सम्मान।

उँगली पकड़ कर चलना सीखा, कभी वो चलती कभी है गिरती,
चोट लगती तो चिल्लाती पापा, बातें करती मीठी– मीठी।
लाडली बिटिया पापा की, रहती न उनके बिना एक पल,
साथ खाती साथ खेलती, थका देती है पापा को, दिनभर चल–चल।

जाने लगी है अब स्कूल, मैडम को देती रोज़ एक फूल,
पढ़ने में तो अच्छी थी, मैडम की भी प्यारी थी।
धीरे– धीरे बढ़ती गई, माँ ने सिखाया घर का भी काम,
माँ की चीज़ों पर हक़ जमाती, चाहिए मुझे तुम्हारा हर एक सामान
हो गई पढ़ाई पूरी, रोशन किया पिता का नाम।

नम हो जाती आँखे पिता की, सोच उसके विवाह का अरमान।
करने लगे थे वो तैयारी, कई सारे लड़कों को देखा,
सब्र तो करना ही होगा, जब समय आयेगा उसकी विदा का।
है ये हर घर की कहानी, लाडली को करना पड़ता विदा,
पति मिले उसे पापा जैसा, रखे मान उसका सदा।

दिव्या पूरी
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय पल्टा
ब्लॉक-चिलकहर, जनपद-बलिया

मेला

गाँव में मेला लगता है।
हम सब को अच्छा लगता है।
मेरे मन को मेला भाता है।
मदारी मेले में नई चीज दिखाता है।
हम सब मेले में जाते हैं।
बहुत सारी चीज खाते हैं।

वैष्णवी गुप्ता
छात्रा, कक्षा-5,
कम्पोज़िट विद्यालय गोगहर,
ब्लॉक-बाबागंज, जनपद-प्रतापगढ़

मेरी प्यारी मैम

मेरी मैम आती हैं
सबकी राज दुलारी हैं।
मेरी मैम अच्छी हैं।
सबके दिल में रहती हैं।
मैम मेरी जान हैं।
हम सबका सम्मान हैं।
मेरी मैम अच्छी हैं।
दिल की बहुत सच्ची हैं।

अंशिका
छात्रा, कक्षा-5,
कम्पोज़िट विद्यालय गोगहर,
ब्लॉक-बाबागंज, जनपद-प्रतापगढ़

दोस्त

मेरी दोस्त अच्छी है।
मेरी दोस्त सच्ची है।
मेरे दिल मे रहती है।
मेरे मन को भाती है।
मेरी दोस्त प्यारी है।
वो सबसे न्यारी है।
हम सब की वो जान है।
स्कूल की वो शान है।

दिव्यंजलि
छात्रा, कक्षा-5,
कम्पोज़िट विद्यालय गोगहर,
ब्लॉक-बाबागंज, जनपद-प्रतापगढ़

चंदामामा

चंदामामा (Chandamama) भारत के बाल साहित्य के इतिहास में एक अत्यंत प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण नाम है। यह बच्चों और युवाओं पर केंद्रित एक लोकप्रिय मासिक पत्रिका थी, जिसकी शुरुआत 1947 में बी. नागी रेड्डी ने की थी।

चंदामामा एक ऐसी पत्रिका थी जिसने भारतीय लोककथाओं, पौराणिक कथाओं और ऐतिहासिक गाथाओं को सरल, चित्रात्मक और रोचक ढंग से बच्चों तक पहुँचाया।

विषय–वस्तु : इसकी कहानियों में राजा–रानी, देवता, राक्षस, परियाँ, और पशु–पक्षी होते थे। विक्रम–बेताल और तेनालीराम के किस्से इसके सबसे लोकप्रिय धारावाहिक थे।

कला और चित्रण : इसमें देश के बेहतरीन कलाकारों (जैसे– एम.टी.वी. आचार्य) का काम होता था, जिसने इसकी दृश्य पहचान (Visual Identity) को कई दशकों तक परिभाषित किया। सुंदर और विशिष्ट चित्र बच्चों की कल्पना को उड़ान देते थे।

भाषा : यह पत्रिका हिंदी, तमिल, तेलुगु सहित कई भाषाओं में प्रकाशित होती थी, जिससे यह सही मायने में एक पैन–इंडिया पत्रिका बन गई थी।

बच्चों को चंदामामा क्यों पढ़ना चाहिए? (Reasons to Read)

चंदामामा पढ़ने से बच्चों को कई प्रकार के लाभ मिलते थे, जो आज भी इसकी कहानियों में मौजूद हैं :

1. भारतीय संस्कृति और मूल्यों का ज्ञान :

यह पत्रिका बच्चों को सहजता से हिंदू पौराणिक कथाओं, रामायण, महाभारत और अन्य लोक कथाओं से परिचित कराती थी।

लाभ : इससे उन्हें अपनी संस्कृति और जड़ों से जुड़ने में मदद मिलती थी, और वे नैतिक मूल्यों (जैसे सच्चाई, ईमानदारी, साहस, न्याय) को कहानियों के माध्यम से सीखते थे।

2. कल्पना शक्ति और रचनात्मकता का विकास :

चंदामामा की रहस्यमय और जादुई कहानियाँ, बेहतरीन चित्रों के साथ, बच्चों की कल्पना शक्ति (Imagination) को उत्तेजित करती थीं।

लाभ : बच्चों का रचनात्मक चिंतन और जिज्ञासा बढ़ती थी, जो उनके समग्र मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

3. पठन कौशल और भाषा सुधार :

पत्रिका की सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण भाषा बच्चों को हिंदी या अन्य भाषाओं में पढ़ने के लिए प्रेरित करती थी।

लाभ : यह शब्द भंडार (Vocabulary) में वृद्धि करती थी और शुद्ध व स्पष्ट पढ़ने की क्षमता का विकास करती थी।

4. समस्या–समाधान कौशल (Problem&Solving Skills) :

विक्रम–बेताल या तेनालीराम जैसे किस्से अक्सर ऐसी पहेलियाँ या समस्याएँ प्रस्तुत करते थे, जहाँ बुद्धि और तर्क का प्रयोग करना होता था।

लाभ : बच्चे तार्किक रूप से सोचना और जटिल परिस्थितियों में समाधान खोजना सीखते थे।

चंदामामा केवल एक पत्रिका नहीं थी, बल्कि यह मनोरंजन, शिक्षा और संस्कृति का एक अद्भुत संगम थी जिसने कई पीढ़ियों के बचपन को समृद्ध किया। कुछ सबसे महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है, वो भी एक मजेदार और रोमांचक तरीके से।

नरेन्द्र नाथ पटेल
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय सुरहन,
ब्लॉक- भदोही जनपद-भदोही

डिस्क्लेमर (अस्वीकरण)

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन 'शिक्षण संवाद' बेसिक शिक्षकों का आपसी सीखने-सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस संकलन में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस संकलन में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदाई होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्च कोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए सम्पादक मण्डल दावा नहीं करता है।

किसी भी सुझाव शिकायत के लिए मिशन के ईमेल- **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप नम्बर **9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. मिशन शिक्षण संवाद ऐप :
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.missionshikshansamvad.app

2. फेसबुक पेज : http://www.facebook.com/shikshansamvad/

3. फेसबुक समूह : http://www.facebook.com/groups/1180108654646 49

4. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.com

5. X : https://twitter.com/shikshansamvad?t=t61sjplXv4SmGJcD3I8x8Q&s=09

6. यू-ट्यूब : https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

7. व्हाट्सऐप नं0 : 9458278429

8. ई-मेल : shikshansamvad@gmail.com

9. टेलीग्राम : https://t.me/missionshikshansamvad

10. वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद